

তালঃ দাদরা

(২৮)

বন্ধু তোমায় কী বলিব
তিমিরের ঘূম ভাঙ্গায়ে দিয়েছ
আলোর পথেই চলিব
চলিব চলিব চলিব ॥

অনাদরে থাকা কুসুমকলিটি
মালায় গাঁথিয়া রেখেছ
ধূলিধূসরিত মনের অর্ধ্য
কোলেতে তুলিয়া নিয়েছ ॥

সব বিনিময়ে তোমাকে পেয়েছি
তোমার কথাই শুনিব
শুনিব শুনিব শুনিব ॥

(আনন্দনগর, ৪ঠা অক্টোবর, ১৯৮২)

| | | | | | |
|----|----------|------------|-----------|-------------|---|
| | ১ | ০ | ১ | ০ | I |
| II | পা -+ গা | মা গা -+ I | সা রা রা | ন্ম সা -+ I | |
| | ব ন্ম ধু | তো মা য় | কী ০ ব | লি ব ০ | |
| I | পা পা গা | মা গা -+ I | সা রা রা | ন্ম সা সা | I |
| | তি মি রে | র ধু ম | ভা ঙ্গ যে | দি ঘে ছ | |
| I | সা সা রা | রা রা গা I | রা পমা গা | -+ -+ -+ I | |
| | আ লো রু | প থে ই | চ লিং ব | ০ ০ ০ | |
| II | পা পা গা | মা গা গা I | সা রা রা | ন্ম সা সা | I |
| | অ ন্ম দ | রে থা কা | কু সু ম | ক লি টি | |
| I | সা সা রা | রা রা গা I | রা পমা গা | -+ -+ -+ I | |
| | মা লা য় | গাঁ থি যা | রে খে ০ | ০ ০ ০ | |

| | | | | | | |
|----|-----------|----------|---|-----------|-----------|-------|
| I | পা পা গা | মা গা গা | I | সা রা রা | না সা সা | I |
| | ধু লি ধু | স রি ত | | ম নে র | অ ব্ ঘ্য | |
| I | সা রা রা | রা রা গা | I | রা পমা গা | -+ -+ -+ | I |
| | কো লে তে | তু লি ঘা | | নি য়ে০ ছ | o o o | |
| II | পা -+ গা | মা গা গা | I | সা রা রা | না সা সা | I |
| | স ব বি | নি ম য়ে | | তো মা কে | পে য়ে ছি | |
| I | সা সা রা | রা রা গা | I | রা পমা গা | -+ -+ -+ | I |
| | তো মা ব্ | ক থা ট | | ও নিং ব | o o o | |
| I | সা সবা রা | রা রা গা | I | রা পমা গা | -+ -+ -+ | II II |
| | ও নিং ব | ও নি ব | | ও নিং ব | o o o | |